भजन

तर्ज–आखिर दिल है न

इस्के गुझ पिया के दिल में,इनमें डूबी रूहें मुतलक
देखें पहले चारो सागर,न है कोई हक दिल माफक
बेहिसाब पिया के सुख को, पाए वोहि पिए जो साकी सराब
जब इस्क तरंगे आयें,नैनों से नैन मिलायें
हक मीठे मुख की रसना,स्यामा जी रूहों को पिलायें
ये ही इस्क,है न...,इस्क है न
ये इस्क है,ये इस्क है,ये इस्क है
दिल से दिल तक की ही मंजिल है

1– ए सुख क्यों कहे जायें,रस भरी पिया रसना के
नैन रसीले प्रेम में भीगे,रूहों के दिल में चुभ जायें
इस्क प्याला रंग रस का पिया,तालू रूह के देते कर प्यार
मासूक का दिल आसिक है,आसिक दिल है मासूक
जब इस्क रूहें मिल जायें,कोई आशिक न माशूक
ये इस्क..

2– ये सागर है पिया इश्क का,गहरा गुझ और गंभीर
बेवरा इस्क वास्ते,खेल दिखाया दिल भीतर
मूलमिलावे में बैठे बैठे,ये खेल दिखाया पिया
ऐसी साहेबी दिखाई बुजरक,रूहों को चरणों बिठाया
इश्क ही के दिल में बिठा कर,इश्क का ही स्वाद चखाया
ये इस्क...

3–इश्के सागर की गहराई में,छिपा गुझ पिया जी के दिल का
इश्क के तन रूहें,पिया ने,अर्श दिल रूहों का है बनाया
इसी अर्श दिल में बैठ पिया,इश्क अपना जाहेर किया
यहीं गुझ है इस्के दिल का,करें जाहेर मांहे खिलवत
याद आवे जब खिलवत की,इस्क में भीगे निसवत
ये इस्क...
4–इस्के सागर में ऐसे जाती हैं,रूहें पिया की सबमिलकर
खीर सागर में एकदिल होकर,सिनगार विरह का सजकर
इक दूजी का सिनगार सजें,पिया चाहें सबको ज्यादा
दधि से फिर नूर में आवें,पिया मिलन को तड़पी जावें
नूर से फिर घृत सागर,पिया सब रूहों को ले जावें
क्यूं..ये इस्क है..